Drama & Theatre

Core course

of

BA HINDI

IV SEMESTER

(CUCBCSS)

2014 Admission onwards

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY PO, MALAPPURAM, KERALA, INDIA

673 635

585

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

Drama & Theatre

Core Course of
BA Hindi
IV SEMESTER

(CUCBCSS)

2014 Admission onwards

Prepared By :
Smt. Vanaja K.G. Head of the Department,
Associate Professor, Department of Hindi,
Zamorin's Guruvayurappan College, Calicut.

Scrutinized by :
Dr. N. Girija, Chairperson,
Board of Studies in Hindi UG
Associate Professor of Hindi
Govt. Arts & Science College,
Calicut.

Lay out :
Computer Section, SDE

©
Reserved

MODULE 1 & 2. पोस्टर-शंकर शेष

लेखक परिचय-

डां. शंकर शेष का जन्म 2 अक्तूबर सन् 1933 में मध्य प्रदेश के बिलासपुर में हुआ। नागपुर विश्वविद्यालय से 1956 में बी.ए.ऑनर्स(प्रथम श्रेणी) में पास हुआ। फिर 1960 में पी- एच.डी. प्राप्त की। 1976 में एम.ए.लिग्विस्टिक(प्रथम श्रेणी)। सन 1960 से जीवन पर्यन्त रमगमंच सं संबद्ध। फिल्म फेयर पुरस्कार, मध्य प्रदेश शासन द्वारा साहित्य सम्मान, आशिर्वाद पुरस्कार, साहित्य कला परिषद, दिल्ली द्वारा कोमल गांधार पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत है। 28 अक्तूबर सन् 1981 को श्रीनगर(काश्मीर) मेंउनका निधन हुआ।

नाटक परिचय-

पोस्टर नाटक की कथा बहुत रोचक है। नाटक एक प्रवचन से शुरू होता है। एक युवक खड़ा होकर कहता है कि यह गांव अब कथा प्रवचन के लायक नहीं बचा है क्योंकि इस गांव में एक लड़की के साथ बलात्कार हुआ है और कोई कुछ नहीं बोला। यहां तक कि बलात्कारी और लड़की का बाप दोनों बैठे प्रवचन सुन रहे हैं। तब कीर्तनकार एक गांव की कथा सुनाते हैं। एक आदिवासी गांव में मजदूर पटैल के कारखाने में काम करते हैं। पटैल वनोपज और लकड़ी आदि का धंधा करता है। एक महिला मजदूर चैती अपने मायके से एक कागज ले आती है जिसे देखते ही पटैल आगबबूला हो उठता है और मजदूरी बढ़ा देता है। मजदूरों को समझ में नहीं आता कि इस कागज को देखकर पटैल गुस्सा क्यों हुआ और फिर मजदूरी क्यों बढ़ा दी। वो गांव के मास्टरजी से यह कागज पढ़वाते हैं तब पता चलता है कि दूसरे गांव में काम कर रहे मजदूरों की मांगों का पोस्टर है। उस गांव में राघोबा नाम का एक मजदूर नेता है जो मजदूरों को शोषण के विरूद्ध लड़ने के लिए संगठित कर रहा है। उसने मजदूरों की शराब भी छुड़वा दी है। इसी प्रेरणा से इन मजदूरों में भी हलचल होती है और नाटक एक के बाद एक नया मोड़ लेता है। नाटक में फारेस्ट आर्फ , पटेल और कीर्तनकार के बहाने समाज में शोषक और शोषितों का संघर्ष बहुत प्रभावशाली तरीके से दिखाया गया है।

1.पोस्टर नाटक का सारांश लिखकर उसमें वर्णित राजनैतिक चेतना पर प्रकाश डालिए-

शंकर शेष के राजनीतिक दृष्टि से आम जनता को जागरूक बनाने हेतु उनका 'पोस्टर' नामक नाटक बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की अधिकतर आबादी गाँवों में बसती हैं। सरकारी योजनाएँ गाँवों में आज तक नहीं पहुँची है। शहरी जीवनयापन में तथा ग्रामीण जीवन शैली में काफी अतंर देखने को मिलता है। ग्रामीण परिवेश और उसके अन्दर उस जीवन की पीड़ा, दुख, दर्द तथा आधुनिक शिक्षा के अभाव का सटीक चित्रण पोस्टर नामक नाटक में मिलता है। नाटक में शोषण की विविधताएँ मौजूद हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था अभी गाँवों तक नहीं पहुँची है। अपने निजी स्वार्थ के लिए गाँव के भोले लोगों को वहाँ के ज़मींदार, पूँजीपति वर्ग, राजनेता जानबूझकर उनको शिक्षा के प्रकाश से दूर रखते हैं।

नाटककार ने आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले मजदूरों आदिवासियों की पीड़ा तथा दुख को प्रमुखता से रखा है। पूँजीवादी वर्ग तथा शासक के गठजोड़ से आदिवासियों का शोषण होता है। उन्हें हर कदम पर यह अहसास दिलाया जाता है कि उनकी नियति में ही शोषण लिखा है। नाटक में पटेल जंगल की वस्तुएँ ज़्यादा तोड़ लेता है। वह अधिकारियों को खुश करने के लिए शराब की पार्टी देता है किन्तु वे उसे कुछ हटकर पेश करने को कहते हैं पटेल कहता है साहब - "जंगल में और किया ही क्या जा सकता है.. इस पर सरकारी अधिकारी तपाक से बोलता है जंगली माल तो चखा जा सकता है।"

नाटक में दिखाया है कि शोषक तब के पूँजीवादी ताकतों से हाथ मिलाकर जंगल में आदिवासियों का किस प्रकार शोषण करते हैं। शोषणकारी शक्तियाँ प्रशासन से मिलकर दमितों-वंचितों को झुककर रहने को विवश करती है। आज भी पटेल जैसे स्वार्थी तत्वों की कमी नहीं जो हमारे समाज में अपने स्वार्थ के लिए राजनीति को भी एक हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं।

इन दिनों आदिवासियों की योजनाओं को अमलीजामा पहनाने के लिए सरकार तथा स्वंय सेवी संस्थाएँ बहुत से काम कर रही है। सरकार योजना तो बनाती है किन्तु वह योजना उन तक नहीं पहुँच पाती। नाटककार मध्यप्रदेश के एरिये में रहकर सरकार द्वारा खोली गई संस्थाओं को करीब से देखा तथा उसके असली रूप को नाटक के माध्यम से जनता के सामने रखा। अजीब विडंबना है कि सरकार जो राशि आदिवासियों के हितों के लिए भेजती हैं उस राशि का बड़ी मात्रा में दुरुपयोग होता है। वह राशि उन तक नहीं पहुँच पाती है। आज देश को आज़ाद हुए 65 साल से ज़्यादा हो गये किन्तु आज भी यह आदिवासी समुदाय विकास की तमाम घोषणाओं के बावजूद अपने आदिमयुगीन ढर्रे पर जीने को विवश है, लाचार है। विकास के लिए सरकारें योजनाएँ तो बनाती है किन्तु वह योजना इन तक पहुँच नहीं पाती है। कुछ हद तक पहुँच भी पाती है तो 'पटेल' जैसे लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए प्रशासन से गठजोड़ करके उस आंवटित पैसे को खुद खा जाते हैं। पोस्टर नामक नाटक में साथी -1 तथा कीर्तनकार के परस्पर संवादों में इस राजनीतिक असंगति पर प्रकाश पड़ता है-

"साथी-1 : सुना है, सरकार ने इन आदिवासियों के कल्याण के लिए ट्रायबल वेलफेयर डिपार्टमेण्ट खोला है, जो पिछले तीस साल से चल रहा है।

कीर्तनकार : चल ही नहीं....बड़े ठाठ से चल रहा है।

साथी-1 : तो यह कब तक चलता रहेगा, महाराज?

कीर्तन : जब तक ट्रायबल के पिछवाड़े से लँगोटी नहीं उतर जाती, तब तक यह डिपार्टमेण्ट बेखटक चलेगा, भगत।"

नाटककार आदिवासी क्षेत्रों तथा वहाँ के विकास को बहुत करीब से देखा है। केन्द्र सरकार की योजनाएँ उन तक सही ढंग से पहुँच नहीं पाती है। इन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में रहकर इस बात को नाटक के माध्यम से उठाया। आधिकारिक जानकारी के आधार पर नाटक में तथ्यों को रखा है। सत्तावादी राजनीति के शिकार आदिवासी लोग होते हैं। शिक्षा रोज़गार तो दूर की बात यहाँ जीवन की मूलभूत सुविधाएँ भी नहीं पहुँच पाती है।

मुख्यधारा के समाज ने आदिवासियों के साथ हमेशा से छल किया है। अपने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए इस समाज के सपनों को मुख्यधारा के समाज ने कुचल दिया। इन सब कारणों से इस समाज में असंतोष और विद्रोह के स्वर तेज़ होते गये। इनमें भी अब राजनीतिक चेतना का प्रसार होने लगा है। आज वह अपने हक और अधिकारों के प्रति सचेत होता हुआ दिखलाई पड़ रहा है। नाटक में इन्हीं सब परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। नाटक में अनजाने शहर में अपने साथ लाया गया पोस्टर आदिवासी मजदूरों की जीवन

में क्रांतिकारी परिर्वतन ला देता है। जब वह पोस्टर सभी जगह चिपका मिलता है तो मजदूरों का मालिक तिलमिला जाता है। वह हक़ीक़त को जानने का प्रयास करता है। वह अपने मजदूरों से पूछता है– "बोलो कौन लाया यह पोस्टर? किसने कहा यहाँ चिपकाने को? बताओ, हरामज़ादो, नहीं तो खाल उघेड़कर रख दूँग , तुम्हारी। पोस्टर लगाते हैं साले। बताओ, कौन नेता घुस आया है इस गॉव में? कौन बरगला रहा है तुम लोगों को?"

पटेल को लगता है कि मजदूरों में अब राजनीतिक जागरूकता आ रही है वो अब संगठित होने लगे है। वे शोषण की हदों का डटकर मुकाबला करने को तैयार हो रहे हैं। अब यह राजनीतिक चेतना दूर तक भी जा सकती है। उसे डर लगता है कि इनमें से कहीं कोई नेता न उत्पन्न हो जाए। वह अदंर से नरमी खाता क्योंकि अब उसे लगता है कि पोस्टर में लिखी बातों से लोगों के मन में डर दूर होने लगा है। वे अपने अधिकारों को जानने लगे है। इस कारण से वह दबे स्वर में कहता है– "मैं जानता हूँ कि तुम लोगों को अड़चन है, महँगाई बढ़ रही है। ज़्यादा से ज़्यादा मैं पच्चीस पैसे बढ़ा सकता हूँ। इससे ज़्यादा एक दमड़ी भी नहीं। अगर मंजूर हो तो जाकर उस नेता से कहो कि वह इलाका छोड़कर चला जाए, वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।" ताकतवर लोगों से निपटने के लिए वे सभी पोस्टर में लिखी बातों से क्रांतिकारी हो उठते है।

नाटककार ने नाटक में यह दिखाने का प्रयास किया है कि आज के समाज में शोषित तबकों को निरतंर दबाया जा रहा है। आदिवासी मजदूर अपने हक तथा अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। जब उन्हें अपनी ताकत का अहसास होता है तो वह बड़ी से बड़ी सत्ता को उलटने की क्षमता रखते हैं। समाज में असमाजिक तत्व हमेशा अराजकता फैलाते हैं। नाटककार की संगठित जनशक्ति के प्रति आस्था है। जनता की शक्ति के आगे ताकतवर शोषणकारी शक्तियाँ भी अपने आप को असहाय महसूस करती है। पोस्टर नाटक में इस सच्चाई को उजागर किया है कि एकजुट होकर लड़ने से सदैव सफलता की उम्मीद बँधी रहती है। पोस्टर नामक नाटक अवसरवादी राजनीति, भ्रष्टतंत्र तथा आम आदमी की राजनीति के प्रति बढ़ती उदासीनता के साथ ही जनमानस में सत्ता के विरुद्ध तीखा तीव्र आक्रोश तथा राजनीति के प्रति उदासीनता रखने वाले समाज को जगाने का प्रयास भी करता है। नाटक में शोषणकारी शक्तियों के विरुद्ध संगठित विरोध का समर्थन किया गया है।

नाटककार ने लोकतंत्र के महत्व को पहचाना है। लोकतांत्रिक मूल्यों में आस्था प्रकट की है। नाटक में किर्तनकार लोगों को अपने हक तथा अधिकारों के प्रति सचेत होने को कहता है। वह मानता

है कि लोकतंत्र में हम सब बराबर है। कोई छोटा बड़ा नहीं है। हताश निराश लोगों के मन में लोकतंत्र में भरोसा जगाने का काम करते हुए वह कहता है–

"कीर्तनकार- तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे चारों ओर नादिरशाही मची है।
यह मत भूलो कि तुम एक स्वतन्त्र देश के वासी हो.....
साथी-1 जहाँ प्रजातन्त्र है,यानी डेमोक्रेसी है।
साथी-2 वाणी का स्वातन्त्र्य है...फ्री प्रेस है।
साथी-1 जहाँ सबको जीने का समान अधिकार है.....
साथी-2 जहाँ प्रत्येक व्यक्ति कानून की दृष्टि में बराबर है।"

कुल मिलाकर कह सकते है कि पोस्टर नाटक में राजनीतिक चेतना का तीव्र प्रवाह है। अआज़ादी के बाद की विसंगितियों, विडंबनाओं के साथ लोकतंत्र के प्रति अविश्वास को नाटक के माध्यम से हमारे समक्ष रखा है। लोकतंत्र के लक्ष्य को अच्छी तरह से पहचाने का प्रयास नाटक में किया गया है।

आधुनिक शिक्षा जगत में फैले भ्रष्टाचार का भी शंकर शेष ने अपने नाटकों मे ज़िक्र किया है।

गाँव के लोग आज भी मूलभूत शिक्षा से कोसो दूर है। आज के राजनेताओं के साथ धनाढ्य वर्ग के लोगों ने भी आम जनता को शिक्षा से दूर रखने की हेतु कई षडयंत्र रचते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा के अभाव में आम आदमी सामाजिक तथा राजनीति दोनों स्तरों पर पिछड़ता चला गया।

इस प्रकार शंकर शेष के इस नाटक में राजनीति को प्रमुख आधार बनाया है। राजनीति में अवसरवादिता, धर्म के राजनीतिकरण, खोखले नारों, नेताओं की व्यभिचारिता और गाँधीवादी मूल्यों मे आई गिरावट, नेताओं की हक़ीक़त पर अपने नाटकों के पात्रों के ज़रिये नाटककार ने ज़बरदस्त कटाक्ष किया है। इन नाटकों में राजनीति के दबावों को स्वीकार किया गया है। राजनीतिक व्यवस्था के खोखले ढांचे की पोल खोलने का प्रयास किया गया है। लोकतन्त्र की वर्तमान व्यवस्था पर आक्रमण करने के साथ साथ उन्होंने लोकतन्त्र के प्रति आस्था भी बनाए रखी है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि राजनीतिक चेतना की दृष्टि से शंकर शेष के नाटकों का साठोत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

1. मैं उस भयानक बात का बोझ तब से अपनी छाती पर पाले .....पर कहने की हिम्मत नहीं होती..(विराम) महारज ,इसीलिए कहता हूँ यह जगह अब ब्रह्म- निरूपण के लायक नहीं रही

   डॉ शंकर शेष का नाटक पोस्टर एक सामाजिक-राजैतिक धरातल पर लिखा गया नाटक है। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि शोषित वर्ग जब तक जागरूक नहीं होता तब तक शोषक गण उनका शोषण करते ही रहेगा। वैसे निम्न स्तर के लोगों की शिक्षा के बारे में भी जिक्र किया है।

   नाटक के आरंभ में कीर्तनकार अपने साथियों के साथ एक गांव में कीर्तन-प्रवचन करने लगते हैं। जब कीर्तन-प्रवचन शुरू किया तब एक श्रोता उनसे निवेदन करता है कि यह जगह कीर्तन करने लायक नहीं है। यहाँ पाप ही पाप है। क्योंकि वहाँ साल भर पहले एक गरीब लड़की का बलात्कार हुआ है। बलात्कार करनेवाले बडे ताकतवाले हैं इसलिए उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने केलिए किसी को हिम्मत नहीं। श्रोता कहता है कि उसने अपनी आँखों से उस बलात्कार को देखा है,पर डर के कारण वह कुछ भी बोल नहीं पाया। यह भी नहीं एक साल से उस बोझ को वह

   अपनी छाती पर पाले है। इसलिए वह कहता है कि वहाँ ब्रह्म निरूपण के योग्य जगह नहीं। वहाँ जातीयता,उद्दण्डता आदि ही शासन करते है।

2. वह लोगों में यह विश्वास बनाए रखना चाहता था कि उन्हें जो ज़िन्दगी मिली है, वह महज उनके पूर्वजन्मों का फल है।

यह भाग पोस्टर नामक नाटक से लिय हुआ है। किसी आदिवासी गाँव में वहाँ के मालिक के रूप में पटेल नामक एक व्यक्ति रहता था। वह पटेल हमेशा आदिवासियों को अपने अधीन रखना चाहता था। आदिवासी लोग अनपढ थे। पटेल नहीं चहते थे कि ये लोग पढे-लिखे बने। रूखे-सूखे खाकर,ठंडा पानी पीकर ये लोग अपने को खुश समझते थे। यह भी नहीं पटेल उन्हें यह विश्वास भी दिलाना चाहा कि अपने पूर्वजन्मों के कर्मफल के ही कारण ये लोग ऐसे जीवन जीते हैं।

आदिवासियों के मन में ऐसा विश्वास बनाए रखने केलिए किसी स्वामीजी को बुलाकर उपदेश भी सुनाता है। स्वामीजी उन्हें हमेशा स्वामि भक्ति करने का उपदेस करते हैं। इस प्रकार पटेल आदिवासियों को हमेशा के लिए निम्न स्तर पर रखकर अपना लाभ उठाना चाहा। बेचारे अनपढ़ आदिवासी उसकी आज्ञा का पालन करते रहे।

3. उस कागज़ ने हम को रास्ता दिखाया है, उसने साबित किया है कि लड़ा जा सकता है। आप बनाइए कागज़।

यह भाग डॉ.शंकर शेष का नाटक पोस्टर का है। अपने को गाँव का मालिक मानने वाला पटेल आदिवासी मज़दूरों से कठिन रूप से काम करवाके सभी प्रकार का लाभ उठाता था। एक बार ऐसा हुआ कि कल्लू नामक एक मज़दूर की पतनी चैती जो दूसरे गाँव की थी, मायके से लौटते वक्त रास्ते में मिले एक पोस्टर उठा लायी। उस पोस्टर को उसके पति कल्लू ने पटेल के गोदाम के दीवार पर लगा दिया। उनके लिए वह सिर्फ एक कागज़ ही था। लेकिन वह पोस्टर ने जादू का काम किया। पोस्टर देखकर पटेल साहब बेचैन हुए और उसने चार आने मज़दूरी बढ़ाने को तैयार हुए।

इस घटना के साथ कल्लू और पत्नी चैती को दूसरे मज़दूरों के बीच थोडा आदर प्राप्त हुआ। फिर उन्होंने पाँच पोस्टर लगवा दिये। तब भी पटेल आग बबुला हो गया। अब की बार पोस्टर में चार रुपये बढ़ाने को लिखा था। कुल मिलाकर आठ आने बढ़ा दिये। यह भी नहीं कल्लू को मुकादम और चैती को पटेल के हवेली में काम के लिए रखा दिया। यह बात जब कल्लू अपने मार्ग दर्शक गुरुजी से कहा तो उन्होंने पटेल की असलियत के बारे में बता दिया। साथ ही गाँव के सुखलाल के बारे में भी। तब कल्लू निर्णय लेता है कि इस अन्याय के विरुद्द भी वह लड़ेगा। इसके लिए पोस्टर बनवाने को गुरुजी से कहते हुए कल्लू कहते है कि उस कागज़ ने हम को रास्ता दिखाया है। उसने साबित किया है कि लड़ा जा सकता है। आप बनाइए तो कागज़।

बाद में कल्लू और चैती की जीत होती है। सब मज़दूर हिम्मत धरकर पटेल के अत्याचारों के विरुद्ध खडे हो जाते हैं और पटेल से प्रत्याक्रमण करने को तैयार हो जाते है।

Short questions & answers.

1. श्रोता-1 क्यों कहता है कि वहाँ ब्रह्म निरूपण के लिए योग्य जगह नहीं?

जब कीर्तनकार कीर्तन-भजन करना शुरू किया तो एक श्रोता आकर कहता है कि वह जगह कीर्तन-भजन केलिए योग्य न , क्योंकि वहीं मंदिर के पिछवाडे एक साल पहले एक गरीब लड़की पर बलात्कार हुआ है।

2. पटेल कौन है और वह क्या काम करता है?

पटेल समझता है कि वही गाँव का मालिक है। गाँव की पूरी ज़मीन पटेल की है। जंगल का ठेका भी उसने ले रखा है। उसने गाँव के लोगों को अपने मज़दूर रखे हैं। ये लोग रोज़ सिर्फ एक रुपया के लिए पटेल को जंगल से हर्रा, बहेड़ा, आंवला, गोंद, चिरौंजी आदि इकट्ठा कर देते है। फिर गोदाम में इसकी छंटाई और सफाई करके इन मालों को बडे-बडे शहरों में भेजते हैं। जो कुछ कमाते हैं उससे वह डाट-बाट से जीवन बिताता है

3.पोस्टर किसको मिला कहाँ से मिला?

पोस्टर कल्लू की पत्नी चैती को शहर के सडक से मिला।

4. पहली बार पोस्टर लगाने से क्या परिणाम निकला?

पहली बार पोस्टर मज़दूरों ने मज़ाक से लगाया था। लेकिन पटेल इसे देखकर हैरान हो गया। यह भी नहीं इसके बारे में उन से पूछ-ताछ भी की। लेकिन कोई कुछ नहीं बोला। सब चुप रहे। सब डर गये थे। लेकिन उनका चुप रहना पटेल को और भी घबरा कर दिया। पटेल ने उनसे कहा कि पच्चीस पैसे बढ़ा देंगे। और कुछ भी नहीं। इतना कहकर जब पटेल वहाँ से चला गया तो सब मज़दूर उस पोस्टर को छूकर प्रणाम किया। उन्हें लगा कि उस कागज़ में कोई जादू है।

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे **भीष्म साहनी** (8 अगस्त 1915-- 11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। भारत पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ-साथ ये व्यापार भी करते थे। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में लिखने का काम किया। बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जा मिले। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने। 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे। यहां उन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया। 1965 से 1967 तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पात्रिका का सम्पादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो-एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्सअसोसिएशन) से भी जुड़े रहे। 1993 से 97 तक वे साहित्य अकादमी के कार्यकारी समीति के सदस्य रहे।

भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे मानवीय मूल्यों के लिए हिमायती रहे और उन्होंने विचारधारा को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया। वामपंथी विचारधारा के साथ जुड़े होने के सा -साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी आंखो से ओझल नहीं करते श आपाधापी और उठापटक के युग में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। उन्हें उनके लेखन के लिए तो स्मरण किया ही जाएगा लेकिन अपनी सहृदयता के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे। भीष्म साहनी हिन्दी फ़िल्मों के जाने माने अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार 1975 में शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1983 में एफ्रो एशियन राइट असोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1985 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित कि या गया। उनके उपन्यास तमस पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था।

प्रमुख रचनाएँ

उपन्यास - झरोखे, तमस, बसन्ती, मायादास की माडी, कुन्तो, नीलू निलिमा निलोफर। **कहानी संग्रह** - मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर। **नाटक** - हनूश (1977), माधवी (1984), कबीरा खड़ा बजार में (1985), मुआवज़े (1993)। **आत्मकथा** - बलराज माय ब्रदर। **बालकथा**- गुलेल का खेल।

नाटक हानुश की कथावस्तु

लगभग पांच सौ वर्ष पहले प्राग नगर में हानुश नाम का एक ताला मिस्त्री हुआ। उसका भाई एक पादरी था। परिवार में पत्नी और एक बच्ची थी। बाद में एक निराश्रि जेकब को भी परिवार में रखलिया गया जो ताले बनाने का काम करता और कात्या उसे घर-बाज़ार में बेच आती और इस प्रकार पारिवारिक खर्च चलता। हानुश ने कई लोगों के मुँह से कहीं और बनी घडी की चर्चा सुनी तो उसमें भी यह महत्वाकांक्षा जन्मी कि वह भी घड़ी बनाए। उसने नगर के एक गणित शिक्षक से हिसाब-किताब की बातें समझीं,लुहार से आवश्यक औजार बनवाए, पदरी भाई की सहायता से चर्च से अनुदान उपलब्ध किया और घड़ी बनाने के काम में जुट गया। उसका परिवार घोर आर्थिक विपन्नताओं से होकर गुज़रने लगा क्योंकि घर में जो कमानेवाला था वह अब घड़ी बनाने लगा था और चर्च के अनुदान घड़ी के पुर्जों और घर के लिए बराबर पूरा नहीं पड़ता। जब जेकब को भी घर में रख लिया गया तो ताला बनाने का पुराना धन्धा फिर से चालू हुआ और परिवार को कुछ राहत मिली- पर तब तक तो पन्द्रह-सोलह वर्ष गुज़र चुके थे। जेकब के आ जाने से हानुश को भी मदद मिली, वह जब-तब जेकब को घड़ी का तन्त्र समझाता और उससे सहायता लेता। पस्त हिम्मत हानुश जेकब के आ जाने से फिर हिम्मत कर अपने काम में लग गया । इस तरह सत्रह वर्ष गुज़र गए। कुछ शुभचिन्तकों के प्रयास से हानुश को घड़ी बनाने के लिए अन्त में नगर के व्यवसायियों से इस शर्त पर सहायता दिलाई गई कि घड़ी के बन जाने पर घड़ी को उन्हीं लोगों की इच्छानुसार स्थापित किया जाय। अपनी योजना की सफलता के प्रति और अधिक आशान्वित होकर हानुश अपने

काम में सुध-बध खोकर जुट गया। इन सत्रह वर्षों में न जाने कितनी बार उसने घड़ी बनाने का निशचय छोड़-सा दिया था क्योंकि परिवार की दुर्दशा उससे देखी नहीं जाती थी—या फिर समय समय पर उपकरणादि के लिए उसे आर्थिक सहायता नहीं मिल पाती तो वह निराश हो उठता था—फिर भी एक अनजानी सी शक्ति उसे खींचकर घड़ी की ओर ले जाती। न जाने कितने मानसिक घात-प्रतिघात झेलने के बाद , पारिवारिक विपन्नता और भावग्रस्तता की सीमाओं से गुज़रने के बाद ,आशा-निराशा के अनेक झटके बर्दाश्त करने के बाद अन्ततः हानुश ने घड़ी बना ही ली। उसका वर्षों का स्वप्न और परिश्रम साकार हो उठा। वह इस निर्मिति केलिए अपने पादरी भाई का आभारी था जिसने उसे चर्च से प्रारंभिक सहायताएँ दिलवाई और उसके भीतर हमेशा आशा एवं उत्साह का संचार करता रहा, वह अपने परिवार के प्रति कृतज्ञ था क्योंकि उन्होंने सारे दुख-तकलीफ़ सहकर उसे एक महान कलाकृति गढ़ सकने का अवसर दिया और उसे पथभ्रष्ट नहीं किया। वह उन व्यवसायियों के प्रति आभारी था, जिनकी अंतिम सहायता से ही घड़ी का निर्माण पूरा हो सका, अन्यथा पूर्ण होने की स्थिति में आकर भी उसकी कामना अपूर्ण ही रह जाती और ठीक उस अवसर पर जब सफलता के निकट पहूँचकर भी वह अपने को असहाय पा रहा था तो उन्हीं व्यवसायियों ने उसकी सहायता कर उसे सफल बनाया था।

व्यवसायियों ने एकदम निष्काम भाव से हानुश की सहायता की हो, ऐसी बात नहीं। वे घड़ी का महत्व समझते थे। वे यह भी समझते थे कि अगर घड़ी बन गई तो इसी घड़ी के द्वारा वे न केवल बादशाह पर ढीले हो रहे, अपने वर्ग के प्रभाव को मज़बूत बना सकेंगे अपितु देश का गिरता हुआ बाज़ार भी फिर से समृद्ध हो सकेगा। बादशाह पर चर्च और पादरियों का प्रभाव था। बादशाह के दरबार में व्यवसायियों का प्रतिनिधित्व भी नहीं के बराबर था। इसलिए हानुश की घड़ी जब बनकर तैयार हुई तो उन्होंने घड़ी को नगर के व्यस्त चौराहे पर स्थित मीनार में लगाने और बादशाह द्वारा उसका उद्घाटन करवाने का निश्चय किया। इससे वे अपना कई लक्ष्य सिद्ध हुआ अनुभव करते थे- जैसे घड़ी चर्च में नहीं लगी तो इससे चर्च का प्रभाव कम हुआ और व्यापारियों की चर्च पर यह एक विजय हुई। घड़ी को देखने के लिए निश्चय ही बाज़ार के इस व्यस्त चौराहे पर दूर-दूर देश और नगर के लोग आएँगे- इससे प्राग के नगर के उपेक्षित और विपन्न बाज़ार पर

फिर से रौनक आएगी। व्यापार का न चलना उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न था। यह उनकी दूसरी विजय होगी। बादशाह उद्घाटन करेंगे और निश्चय ही इस खुशी के मौके पर वे केवल हानुश को ही पुरस्कृत और सम्मानित नहीं करेंगे अपितु उनके आवेदन पर दरबार में व्यापारी वर्ग के प्रतिनिधित्व को बढ़ाना भी मंज़ूर कर लेंगे। यह उनकी तीसरी विजय होगी। बाद में घड़ी का छोटे पैमाने पर निर्माण और व्यवसाय भी उनका लक्ष्य था। इस प्रकार व्यापारियों की दूरदर्शिता में कोई त्रुटि नजडर नहीं आती और स्वभावत: इस अनुमान को बल मिलने लगा है कि वे चर्च और शासन, धर्म और बादशाही की काफ़ी दिनों से चली आ रही दुरभिसंधि को तोड सकने में सफल होंगे जिससे प्राग की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक परिवेश पतनोन्मुख और विस्फोटक स्थिति से उबर कर पुन: सामान्य स्थिति ग्रहण कर सकेगी। जैसा व्यापारियों ने सोच रखा था—वस्तुत: वैसा ही होता भी है, केवल हानुश के पुरस्कृत और सममानित किए जाने तथा घड़ी का व्यापार करने का उनका अनुमान कुछ गलत साबित होता है।

हानुश की बनाई घड़ी नगर के उसी व्यस्त चौराहे पर खडी मीनार में लगा दी गयी। बादशाह ने उद्घाटन किया। देश-विदेश के अनेक लोग, नगर की सारी जना उस अनोखी कलाकृति को देखने के लिए उमड पड़ी। सब की जुबान पर हानुश का नाम। नागरिकों के अलावा बादशाह की ओर से भी इस अनुपम कलाकृति की रचना के लिए हानुश को सम्मानित और पुरस्कृत किए जाने की घोषणा की गयी। हानुश को सम्मानस्वरूप दरबारी का सम्मानित पद और पुरस्कार स्वरूप सरकारी वृत्ति प्रदान की गयी। जय-जयकार, यश सम्मान और प्रतिष्ठा की चोटी पर पहूँचकर हानुश मन ही मन गद्गद् हो उठा। लेकिन पर्दे के पीछे क्रूर नियति कुछ और कुचक्र रच रही थी। बादशाह चर्च और पादरियों के प्रभाव में थे और चर्च से सहायताएँ मिलने के बावजूद घड़ी चर्च में नहीं लगाई गई, शायद इसलिए, या फिर बादशाह के मन में ऐसा हुआ हो कि घड़ी उनके महल में लगाई जानी चाहिए थी और ऐसा न कर घड़ी को सार्वजनिक चौराहे पर लगाया गया, यह उनके लिए अपमानजनक है शायद इसलिए, अथवा चर्च-विरोधी व्यापारियों को सिर उठाते हुए देखकर उन्हें कुचलना बादशाह को आवश्यक समझ आया हो, इसलिए उन्हें संताप देने और उनके घड़ी के व्यवसाय के मन्सूबे पर पानी फेरने की नीयत से, या फिर यह सोचकर कि हानुश ने अगर फिर कहीं दूसरी घड़ी बना ली तो बादशाह के उस नगर, नगर की उस घड़ी की प्रसिद्धि घट जाएगी; चाहे जो भी कारण समझा या बतलाया जाय, बादशाह के आदेश से हानुश की आँखें निकाल ली गयीं। यह आदेश भी पुरस्कार और सर्वोच्च सम्मान की घोषणा के साथ ही साथ घोषित कर दिया गया। आँखें रहते हुए भी जो अँधेरा बादशाह के इस आदेश से हानुश की आँखों के आगे छा गया था—वह आँखें निकाल लिए जाने पर भी कायम रहा। अब उसके जीवन में अँधेरे के अलावा बचा ही क्या था? अंधेपन से संतप्त हानुश लगभग विक्षिप्त- सा हो गया। अँधे प्रतिशोध में उबलता हुआ हानुश कभी अपने अंधत्व क कारण घड़ी को और कभी अपने आप को मानकर ,कभी अपने आप को और कभी घड़ी को विनष्ट कर देने की बात सोचता। एक दूसरा विस्फोट जेकब के भीतर भी सुलग रहा था- वह घड़ी का भेद अपने दिल में छुपाये किसी तरह प्राग से बाहर निकल भागने में सफल हुआ। एक विस्फोट हानुश के भीतर सुलग रहा था- अपने सांप के कारण स्वरूप घड़ी को वह किसी भी प्रकार नष्ट कर देना चाहता था। निराशा के गहनतम क्षणों में उसने अपने आप को खत्म करने की कोशिश की। लेकिन जब घड़ी खराब हो गयी-उसे घड़ी की मरम्मत करने के लिए घड़ी के निकट जाना पडा। घड़ी के निकट पहूँचकर हानुश का सरल कलाकार हृदय ठीक उसी प्रकार सहज वात्सल्य से ओतप्रोत हो उठा, जिसप्रकार किसी बीमार बच्चे को देखकर उसका पिता विगलित हो उठता है। उसने घड़ी तोडने के बजाय उसे दुरुस्त कर फिर से चालू कर दिया। यह तत्कालीन बादशाही को एक कलाकार का प्रतिदान था-जो उच्च एवं महान है। घड़ी के फिर से चालू होने से नाटक की समाप्ति होती है।

1.भीष्म साहनी एक सफल नाटककार है। हानुश के माध्यम से इसकी समीक्षा कीजिए।

चेक लोककथा पर आधारित इस नाटक में मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिप्रेक्ष्य में

दिखाया गया है। कुपलसाज हानूश की पत्नी कात्या संघर्ष में उसका बराबर साथ देती है। वह पारिवारिक चिंताओं को खुद उठाकर उनसे हानूश को मुक्त कर देती है। वह अपने लिए कुछ नहीं मांगती है। परिवार के लिए स्वयं के गहने और कपड़े तक बेच देती है। जड़-जेवरात से भी महत्वपूर्ण है- दायित्व। इसी का ख्याल वह सदैव रखती है। दिन-रात मेहनत करके परिवार का बोझ उठाने वाली अपनी पत्नी के बारे में हानूश कहता है, "मेरी इस कामयाबी के पीछे तुम्हारी कुर्बानी है। हर काम के पीछे किसी औरत की प्रार्थना होती है, उसकी कुर्बानी होती है, उसकी प्रेरणा होती है।" (पृष्ठ 49) पुरुष द्वारा इस सच्चाई का स्वीकार यानी स्त्री शक्ति के महत्व का स्वीकार है। जो समस्त स्त्री जाति के हौसले बुलंद करता है। हानूश की पुत्री यान्का संघर्ष में आस्था रखने वाली है। उसे विश्वास है कि दिल लगाकर मेहनत करने से सफलता मिलती ही है।

आज जबकि हिन्दी में श्रेष्ठ रंग-नाटकों का अभाव है, भीष्म साहिनी का नाटक 'हानूश' रंग-प्रेमियों के लिए सुखद आश्चर्य होना चाहिए। इसकी पहली प्रस्तुति का ही दिल्ली में जैसा स्वागत हुआ, वह हिन्दी रंगमंच की एक उपलब्धि है। भीष्म साहनी मूलतः कथाकार हैं, नाट्य-लेखन के क्षेत्र में उनका यह पहला लेकिन सशक्त प्रयास है-एक ऐसा प्रयास जो भीष्म साहनी की प्रतिभा को रेखांकित करता है और हिन्दी रंगमंच के एक बड़े अभाव को पूर्ण करने की आशा बँधाती है।

चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में आज से लगभग पाँच सौ साल पहले ताले बनाने वाले एक सामान्य मिस्त्री के दिमाग में घड़ी बनाने का भूत सवार हुआ, और तरह-तरह की विषम परिस्थितियों में लगातार सत्रह साल की कड़ी मेहनत के बाद वह चेकोस्लोवाकिया की पहली घड़ी बनाने में कामयाब हुआ, जो नगर पालिका की मीनार पर लगाई गई। लेकिन इतनी बड़ी सफलता के बाद उस कलाकार को मिला क्या ? बादशाह ने उसकी आँखे निकलवा ली कि वह उस तरह की दूसरी घड़ी न बना सके। चेक-इतिहास ने इस छोटी सी घटना ने भीष्म साहनी के रचनाकार को आन्दोलित किया, और यों हिन्दी में एक श्रेष्ठ नाटक जन्म ले सका। 'हानूश' के माध्यम से भीष्म साहनी ने एक ओर कलाकार की दुर्दमनीय सिसृच्छा और उसकी निरीहता को रूपायित किया है तो दूसरी ओर धर्म एवं सत्ता के गठबन्धन के साथ सामाजिक शक्तियों के संघर्ष अभिव्क्ति दी है। कलाकार के परिवारिक तनावों का अंकन 'हानूश' की एक उपलब्धि है, जो आज भी उतने ही सच हैं जितने पाँच शताब्दी पहले थे।

2.हानुश नाटक में वर्णित मानवीय अन्तरंगता पर प्रकाश डालिए।

कथाकार भीष्म साहनी का पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण माटक है –हानुश। यह नाटक भीष्म साहनी की नाट्य लेखन –प्रतिभा का उजागर करता है। पति-पत्नी के बीच सहज कोमल आन्तरिक सूत्र होते हुए भी अर्थ संकट में पैदा हुआ जो तनाव है, वह स्थायी न होते हुए भी क्रूर सत्य है। नाटक का प्रारंभ हानुश की पत्नी कात्या के कड़वाहट और पीडा- भरे संवादों—" जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्जत कौन

औरत करेगी?"- से होता है। पारिवारिक संकट, आपसी संबन्ध, हानुश का व्यक्ति , घडी बनाने की उसकी आन्तरिक लगन, कलाकार की सिसृच्छा, उसका आन्तरिक संकट स्थापित हो जाता है- सत्ता का विरोध और गहरी मानवीय करुणा भी हृदय को उद्वेलित कर जाती है।

दूसरा अंक हानुश यानी कलाकार की सृजन-शक्ति, कला-चेतना और फिर सत्ता द्वारा उसके अमानवीय दमन की भयावह सच्चाई को प्रस्तुत करता है।महाराज द्वारा हानुश की आँखें निकलवाने का क्रूर आदेश, उस आदेश से तडपे, व्याकुल हानुश की स्थिति, चारों तरफ घनघोर सन्नाटा और दूसरी ओर घडी बजने की आवाज़, खुशी में नाचनेवालों की तालियाँ, समारोह का हर्षोल्लास, 'हानुश जुग –जुग जिओ' के स्वरों के बीच घायल हानुश का चीत्कार, पास में अधिकारियों का आकर खडे हो जाना- जिस मार्मिक दृश्य का चित्रण करते है, वह रंगमंच की दृष्टि से अत्यन्त सशक्त तथा प्रभावशाली है। परस्पर विरोधी, तनाव पूर्ण स्थितियों का गत्यात्मक विकास स्वाभाविक क्रम से होता चला गया है।

तीसरा अंक कलाकार की क्रूर, अमानवीय स्थिति को दमित जनशक्ति की आन्तरिक पीड़ा को, सत्ता की खोखली अन्धी नीति को व्यंग्य के स्तर पर ही नहीं, गहरे संवेदनात्मक स्तर पर मार्मिक अभिव्यक्ति देता है। कलाकार की मौत भले ही हो जाए, उसकी सृजन-शक्ति, सामान्य मानव की आन्तरिक शक्ति नहीं मर सकती। अन्त में कहे गये हानुश के शब्द—घड़ी कभी बन्द नहीं होगी –इस सत्य का संकेत कर जाते है।

नाटकीय कथानक की मूल संवेदना का चित्रण और विस्तार मुख्यतया पात्रों के माध्यम से ही होता है। भीष्म साहनी का यह नाटक अपने केन्द्रीय पात्र को ही नाट्य रचना का आधार बनाता है। यह नाटक एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिप्रेक्ष्य में दिखाने का प्रयास मात्र है। सत्ता की विरोधात्मक, विध्वंसात्मक शक्ति और जन शक्ति एवं सामाजिक शक्ति के संघर्ष को सुना गया है। नाटक में व्यवस्था की कूटनीति, क्रूरता स्वार्थपरता, आशंकाग्रस्त दुर्बल मानसिक स्थिति मौजूद है। तो भी –सामान्य मनुष्य और उसकी कलात्मक

संवेदनशीलता,सृजनात्मक व्यक्ति की छटपटाहट, उसका दमन, निरीहता और हत्या, कलाकार के पारिवारिक तनाव और लगाव,सच्चा और स्वाभाविक वातावरण, उसका आर्थिक संकट घरेलू संबन्ध और सहज परिस्थितिय आदि इस नाटक का मूल स्वर है।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

1. अगर आदमी सारा वक्त ऊँच-नीच की ही बात सोचता रहे कात्या, तो उसके मन को शांति कहाँ मिलेगी।

प्रस्तुत भाग भीष्म सहनी के नाटक हानुश का है। नाटक के आरंभ में हानुश की पत्नी कात्या पादरी भाई से हानुश के बारे में कहती है। वह कहती है कि हानुश को परिवार के प्रति तनिक भी चिन्ता नहीं। हर समय घडी बनाते ही रहता है। लेकिन अभी तक उस में कामयाबी भी नहीं मिली है। फिर वह पादरी भाई से विनती करती है कि हानुश से कुफ़लसाज का काम करके परिवार का पालन करने को कहना।

इस वक्त पादरी भाई कात्या से कहते है- अगर आदमी सारा वक्त ऊँच-नीच की ही बात सोचता रहे ,तो उसके मन को कभी शान्ति नहीं मिलेगी। पत्नी होने के नाते कात्या को ही हानुश की प्रेरणा बननी चाहिए। हानुश अपने काम में एक दिन ज़रूर सफल बन जाएगा। तभी तक उसे इन्तज़ार करना ही पडेगा।

2.चलते तो रहना चाहिए मगर क्या मालूम, नुक़्स भी पैदा हो सकते हैं। आख़िर इनसान के हाथ

की बनी चीज़ है।

प्रस्तुत भाग भीष्म साहनी के नाटक हानुश के दूसरे अंक का है।

आखिर हानुश ने सत्रह साल के बाद घडी बनाई। पाँच साल तक नगरपालिका ने उसे घडी

बनाने केलिए आवश्यक धन की सहायता की। इसीलिए घडी नगरपालिका में रखने का

निश्चय किया। नगरपालिका के दीवार में घड़ी रखी तो बहुत लोग घड़ी देखने केलिए वहाँ

पहूँचे।

हानुश के पादरी भाई ने भी घड़ी को देखा। यह खुशी उसके साथ

बाँटने केलिए वह हानुश के घर पहूँचा।उस समय पादरी ने यह शंका प्रकट की कि अब

घड़ी सारा वक्त अपने-आप चलती रहेगी। उस समय हानुश ने यह उत्तर दिया कि चलते तो रहना चाहिए मगर क्या मलूम , नुक़्स भी पैदा हो सकते हैं। आख़िर इनसान के हाथ की बनी चीज़ है। यहाँ हानुश के माध्यम से भीष्म साहनी यह कहना चाहते हैं कि ईश्वर की रचनाएँ तो परिपूर्ण हो सकती है। लेकिन मानव से बनायी चीज़ों में त्रुटियाँ होना सहज कार्य ही है। वैसे घड़ी तो हानुश ने बनाई है। लेकिन वह सदा केलिए चलती रहेगी या नहीं यह तो हानुश भी नहीं बता सकता।

3.तुम देखना, हानुश कुफ़लसाज़ ने ऐसी चीज़ बनाई है जो सदियों तक चलती रहेगी। हम-तुम यहाँ नहीं रहेंगे,हानुश भी नहीं होगा मगर हानुश की घड़ी हमेशा बजती रहेगी।

यह भाग भीष्म साहनी के नाटक हानुश के तीसरे अंक का है। हानुश ने सत्रह साल के तप-साधना के बाद घड़ी बनाई। घड़ी नगरपालिका में रखी भी। बादशाह सलामत ने घड़ी को देखा, खुश हुआ और उनसे हानुश सम्मानित भी हुआ। परंतु इसके साथ साथ बादशाह ने यह आज्ञा भी दी कि हानुश की दोनों आँखें निकलवा देना, ताकि वह फिर कोई और घड़ी नहीं बना पाए। हानुश अन्धा हो गया। उसके सहायक जेकब जो घड़ी बनाने का भेद समझ पाया भाग गया।

एक दिन अधिकारी लोगों ने हानुश के पास आकर कहा कि महाराज ने हानुस को बुलावा भेजा है। क्योंकि घड़ी बन्द हो गयी है, इसका मरमत करना चाहिए। हानुश ने कहा कि वह अन्धा है उससे कुछ भी नहीं होगा। लेकिन अधिकारियों ने धमकी देकर उसे वहाँ तक ले चले जहाँ घड़ी रखी है। अधिकारी से औजार ढूँढ निकलवाकर हानुश घड़ी के पास पहूँचा। उसकी सहायता केलिए अधिकारी ने एक आदमी को भेजा । उस आदमी ने हानुश से कहा कि उसने अपनी घरवाली से कहा कि हानुश कुफ़लसाज़ ने ऐसी चीज़ बनाई है जो सदियों तक चलती रहेगी। हम-तुम यहाँ नहीं रहेंगे, हानुश भी नहीं होगा

मगर हानुश की घड़ी हमेशा बजती रहेगी। उस आदमी के इन शब्दों में हानुश के प्रति आदर और शासन वर्ग के प्रति विरोध प्रकट है।

Short questions & answers

1.पादरी भाई हानुश के घर में क्यों आते है?

पादरी भाई यह सूचना देने केलिए आते है कि गिरजे के अधिकारियों ने माली इमदाद देने से इनकार कर दिया है। इसलिए हानुश को घड़ी बनाने का काम छोड देना पडेगा।

2."मुझे तो यकीन है, एक दिन ज़रूर क़ामयाबी इसके पाँव चूमेगी।" यह किसने कहा? किससे कहा? किसके बारे मे कहा?

बूढ़ा लुहार ने कहा। कात्या से कहा। हानुश के बारे में कहा कि वह घड़ी बनाने में एक दिन ज़रूर कामयाब होगा।

3.जेकब का परिचय दीजिए।

जेकब दूसरे गाँव का युवक है। उम्र करीब 22-23 वर्ष। उसे पादरी के सुअर चुराने के जुर्म में तीन वर्ष तक क़ैदखाने में रहना पडा। फिर छुटकर काम की तलाश करते करते वह हानुश के घर पहूँचा। जब उसने कहा कि वह गाँव में लुहार के पास काम करता था कि कात्या ने हानुश से उसे अपने साथ रखने को कहा। क्यों कि कात्या को लगा कि ज़रूर जेकब हानुश के लिए सहायक बन जाएगा। ऐसे जेकब घड़ी बनाने में हानुश की मदद करने लगे और अन्त में घड़ी बनाने का भेद भी जान लिया। जब महाराज ने हानुश की आँखें निकलवाने की आज्ञा दी तो जेकब वहाँ से भाग भी गया।

4.नगरपालिका के सदस्य क्यों चहते हैं कि घडी उनके यहाँ रखें?

नगरपालिका के सदस्य हानुश से बनाई घड़ी को नगरपालिका में ही रखना चाहते हैं। एक तो वे महराजा को खुश कराना चाहते हैं। फ़िर घड़ी के बहाने वे दरबार में अपने कुछ लोगों को बिठाना चाहते हैं। क्योंकि अभी तक उनमें से की दरबारी नहीं बने है। आगली बात यह हैं कि जो घड़ी देखने आयेंगे उन्हीं के माध्यम से उनके व्यापार की वृद्धि होगी, और उन्हें भी समाज में धन,नाम ,यश आदि मिल सकेंगे।

5.महाराज हानुश की आँखे क्यों निकलवाना चाहते थे?

घड़ी देखकर महाराज तो खुश हुए। लेकिन उन्होंने सोचा कि अगर हानुश दूसरी घड़ी बनाई तो, वह पहली घड़ी से बढ़िया हुई तो क्या होगा। एक रियासत में सिर्फ एक ही घड़ी चाहिए। हानुश को तो दूसरी घड़ी नहीं बनाना चाहिए । इसके लिए एकमात्र उपाय हानुश की आँखें निकलवाना है। आँखें नहीं तो वह फिर खड़ी नहीं बन पाएगी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि हानुश की आँखें निकलवाना चाहिए।

Books for study-

1.पोस्टर-शंकर शेष

2.हानुश- भीष्म साहनी